सूरह – एक कहानी

सूरह अल-फ़ील

हाथी

पूरा सफ़र – वो साल जब परिंदों ने लश्कर हराया –
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 105 • 5 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अलम तर कैफ़ फ़-'अल रब्बुक बि-अस्हाबिल्-फ़ील

1. क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया?

अलम यज्'अल कैद-हुम फ़ी तज़्लील

2. क्या उसने उनकी चाल को अकारत नहीं कर दिया?

व अर्सल 'अलैहिम तैरन अबाबील

3. और उन पर झुंड के झुंड परिंदे भेजे।

तर्मीहिम बि-हिजारतिम्-मिन सिज्जील

4. जो उन्हें कंकरीले पत्थरों से मार रहे थे।

फ़-ज-'अलहुम क-'अस्फ़िम्-म'कूल

5. तो उन्हें खाए हुए भूसे की तरह कर दिया।

हाथी का साल

बेटा, यह सूरह उस वाक़िए के बारे में है जो नबी ﷺ की विलादत से तक़रीबन पचास दिन पहले पेश आया — उस साल जिसे अरब बाद में 'आम अल-फ़ील', हाथी का साल कहने लगे। यह इतना बड़ा वाक़िआ था कि उन्होंने अपना कैलेंडर इसी से गिनना शुरू कर दिया।

जो हुआ, वो मुअर्रिख़ीन और मुफ़स्सिरीन यूँ बयान करते हैं।

यमन में अबरहा नाम का एक हाकिम था, जो हबशा की सल्तनत की तरफ़ से हुकूमत करता था। वो देखता था कि अरब हर साल मक्का, काबा के हज के लिए जाते हैं, और यह बात उसे खलती थी — इतनी इज़्ज़त, इतनी तिजारत, इतनी तवज्जोह, और वो भी एक बे-आब-ओ-गियाह वादी के एक सादे पत्थर के घर को।

तो उसने सनआ में एक शानदार गिरजा बनवाया — आलीशान, सजाया हुआ, ख़ूबसूरत — और एलान किया कि अरब अब वहाँ हज के लिए आएँ। मगर अरब नहीं आए। और रिवायत है कि किसी अरब ने ग़ुस्से में उस इमारत की बेहुरमती कर दी।

अबरहा ने क़सम खाई कि वो काबा ढा देगा। उसने लश्कर जमा किया और उसके साथ एक जंगी हाथी लाया — कुछ रिवायतों में कई हाथी — एक ऐसा जानवर जो अरबों ने कभी मैदान-ए-जंग में नहीं देखा था; ऊँटों और तलवारों के दौर में एक चलता फिरता टैंक। और वो मक्का की तरफ़ बढ़ा।

बेटा, मक्का की दहशत का अंदाज़ा कीजिए। इसके मुक़ाबले के लिए कोई लश्कर था ही नहीं। क़ुरैश ताजिर और क़बाइली लोग थे। जब अबरहा की फ़ौज ने इलाक़े के मवेशी पकड़ लिए — जिनमें नबी ﷺ के अपने दादा अब्दुल मुत्तलिब के दो सौ ऊँट भी थे — तो अब्दुल मुत्तलिब बात करने गए।

और बेटा, यही वो लम्हा है जो मैं आपको याद रखवाना चाहता हूँ। अबरहा यह तवक़्क़ो कर रहा था कि वो काबा की सिफ़ारिश करेंगे। उसके बजाय अब्दुल मुत्तलिब ने अपने ऊँट वापस माँगे।

अबरहा हैरान हुआ और बोला: मुझे तुमसे बेहतर तवक़्क़ो थी — तुम अपने ऊँटों की बात करने आए हो, जबकि मैं उस घर को ढाने आया हूँ जो तुम्हारी इज़्ज़त और तुम्हारे बाप दादों का दीन है?

और अब्दुल मुत्तलिब ने वो जवाब दिया जो चौदह सदियों से गूँज रहा है: **'मैं ऊँटों का मालिक हूँ। और उस घर का भी एक मालिक है जो उसकी हिफ़ाज़त करेगा।'**

बेटा, उस जुमले का ईमान महसूस कीजिए। उन्होंने यह नहीं कहा कि 'हम तुमसे लड़ेंगे'। उन्होंने कोई लश्कर जमा नहीं किया। उन्होंने बस एक हक़ीक़त बयान कर दी: यह घर किसी का है, और वो अपनी चीज़ की हिफ़ाज़त पर क़ादिर हैं।

क्या आपने नहीं देखा?

'अलम तर कैफ़ फ़-'अल रब्बुक बि-अस्हाबिल्-फ़ील — क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया?'

बेटा, अल्फ़ाज़ पर ग़ौर कीजिए: 'क्या आपने नहीं देखा'। जब यह हुआ तब नबी ﷺ पैदा भी नहीं हुए थे। मगर यह वाक़िआ इतना मशहूर था, इतने लोगों ने देखा था, इतना

क़रीब का था — बचने वाले अभी मक्का में ज़िंदा थे, और अरब अभी तक इसका तज़्किरा करते थे — कि अल्लाह इसे देखी हुई चीज़ के तौर पर बयान कर रहे हैं।

और नाम का इंतिख़ाब देखिए: 'रब्बुक' — आपका रब। सिर्फ़ 'अल्लाह' नहीं — वो जो आपकी परवरिश और हिफ़ाज़त करते हैं। क्योंकि मक्का में सताए हुए नबी ﷺ को दिया जाने वाला पैग़ाम ज़ाती था: जिस रब ने उस घर की हिफ़ाज़त की, वो आपकी भी करेंगे।

'अलम यज्'अल कैद-हुम फ़ी तज़्लील — क्या उसने उनकी चाल को भटका नहीं दिया?'

बेटा, 'तज़्लील' — उसने उनकी तदबीर को भटका दिया, रास्ता भुला दिया, बेकार कर दिया। इतनी सारी प्लानिंग: हाथी को समुंदरों और सहराओं के पार लाना, रसद, मुआहिदे, सालों की तैयारी। और अल्लाह ने उसे बेकारी में भटका दिया।

रिवायतों में आता है कि जब लश्कर मक्का की हद पर पहुँचा और हाथी का रुख़ काबा की तरफ़ किया गया, तो वो बैठ गया और उठने से इनकार कर दिया। उसे मारा गया; उसमें लोहे के अंकुसे चुभोए गए। यमन की तरफ़ मोड़ देते — वो उठ कर दौड़ने लगता। मक्का की तरफ़ मोड़ देते — वो फिर बैठ जाता।

बेटा, एक जानवर वो बात समझ गया जो आदमियों के एक पूरे लश्कर ने समझने से इनकार कर दिया।

परिंदे और छोटे कंकर

'व अर्सल 'अलैहिम तैरन अबाबील — और उसने उन पर झुंड के झुंड परिंदे भेजे — तर्मीहिम बि-हिजारतिम्-मिन सिज्जील — जो उन्हें पकी हुई मिट्टी के पत्थरों से मार रहे थे — फ़-ज-'अलहुम क-'अस्फ़िम्-म'कूल — तो उन्हें खाए हुए भूसे की तरह कर दिया।'

बेटा, रुक कर वो तज़ाद देखिए जो अल्लाह ने यहाँ तरतीब दिया है, क्योंकि यही इस सूरह का पूरा मक़सद है।

एक तरफ़: ज़मीन का सबसे बड़ा जानवर, एक तर्बियत याफ़्ता लश्कर, एक सल्तनत की पुश्त-पनाही, और सालों की बनी हुई तदबीर।

दूसरी तरफ़: परिंदे। छोटी, बे-वज़न मख़्लूक़। और उनके हथियार? आसमान से आग नहीं, ज़लज़ला नहीं, सैलाब नहीं — पकी हुई मिट्टी के छोटे कंकर।

और नतीजा? 'क-'अस्फ़िम्-म'कूल' — उस भूसे की तरह जिसे चबा लिया गया हो। बेटा, तबेले का फ़र्श तसव्वुर कीजिए: चबाए हुए तिनके, टूटे हुए, रौंदे हुए, बे-क़ीमत, मिट्टी में बिखरे हुए। दिन ख़त्म होने तक शाही लश्कर का यही हाल था।

बेटा, समझिए अल्लाह क्या सिखा रहे हैं। वो उन्हें किसी भी चीज़ से तबाह कर सकते थे। उन्होंने सबसे छोटा मुमकिन औज़ार चुना — ताकि कोई यह न कह सके कि परिंदे बड़े ताक़तवर थे। परिंदे कुछ भी नहीं थे। कंकर कुछ भी नहीं थे। तो जो हुआ उसकी सिर्फ़ एक ही तौजीह बचती है।

और क़ुरआन में उनका यही तरीक़ा है: नमरूद के लिए एक मच्छर, आद के लिए एक हवा, समूद के लिए एक चीख़, फ़िरऔन के जादूगरों के लिए एक लाठी। जब अल्लाह फ़ैसला कर लेते हैं, तो अक्सर जान-बूझ कर कोई छोटी चीज़ इस्तेमाल करते हैं, ताकि यह बात साफ़ रहे कि ताक़त किसकी है।

बेटा, यह याद रखिए जब भी आपके सामने कोई चीज़ हद से बड़ी लगे — कोई बीमारी, कोई ज़ालिम, कोई निज़ाम, कोई क़र्ज़, या कोई शख़्स जिसके हाथ में आपकी रोज़ी हो। उस घर के मालिक आपके भी रब हैं, और उन्हें कभी बड़े औज़ार की ज़रूरत नहीं पड़ी।

यह सूरह क्यों, और उसी वक़्त क्यों

बेटा, अब यह सोचिए कि अल्लाह ने यह सूरह नबी ﷺ पर मक्का के सख़्त दिनों में क्यों नाज़िल की।

क़ुरैश उन्हें सता रहे थे। उनके पास तादाद थी, दौलत थी, और शहर पर इख़्तियार था। और अल्लाह ने उन्हें — और उन सब को — याद दिलाया: याद है उन लोगों का क्या हुआ था जो आख़िरी बार इस घर पर लश्कर ले कर आए थे? तुम ख़ुद अपना कैलेंडर

इसी से गिनते हो। तुम्हारे बाप दादों ने अपनी आँखों से देखा था।

और एक गहरी बात है, बेटा, जिसे अगली सूरह मुकम्मल करती है: अल्लाह ने काबा को अबरहा से बचाया — और अब वही लोग, जो उसी के साये में रहते थे, जिनकी ख़ुशहाली उसी की वजह से थी, उस शख़्स को सता रहे थे जो उन्हें उसी के मालिक की बंदगी की तरफ़ बुला रहा था।

और वक़्त में भी एक ख़ूबसूरत निशानी है, बेटा। यह वाक़िआ नबी ﷺ की विलादत के साल हुआ। अल्लाह ने उस घर को साफ़ भी किया और महफ़ूज़ भी रखा जो उनकी उम्मत का क़िब्ला बनने वाला था — उस शख़्स की पैदाइश से सिर्फ़ चंद हफ़्ते पहले जो उसे बुतों से पाक करने वाला था। बेटा, अल्लाह ज़मीन बहुत पहले तैयार कर लेते हैं, जब बीज अभी नज़र भी नहीं आता।

और एक आख़िरी सबक़, और यही घर ले जाने वाला है: अब्दुल मुत्तलिब के अल्फ़ाज़। 'उस घर का एक मालिक है जो उसकी हिफ़ाज़त करेगा।'

बेटा, हम अपने आपको उन चीज़ों की हिफ़ाज़त में थका देते हैं जो अल्लाह की हैं — उनका दीन, उनकी किताब, उनका घर, उनका हक़। हमें ज़रूर मेहनत करनी चाहिए, बोलना चाहिए, कोशिश करनी चाहिए। मगर नतीजा कभी हमारे कंधों पर था ही नहीं। अपना हिस्सा अब्दुल मुत्तलिब की तरह कीजिए — वो गए, उन्होंने बात की, और जो उनकी ज़िम्मेदारी थी वो वापस ली — और फिर घर उसके मालिक पर छोड़ दीजिए।

क्योंकि परिंदे हमेशा मौजूद हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. घर का मालिक अपनी चीज़ की हिफ़ाज़त ख़ुद करता है — अपना हिस्सा कीजिए, फिर नतीजा उस पर छोड़ दीजिए।

2. सालों की बनी हुई शाही तदबीर को 'भटका' दिया गया — अल्लाह के फ़ैसले के सामने कोई मंसूबा नहीं चलता।

3. अल्लाह अक्सर जान-बूझ कर सबसे छोटा औज़ार चुनते हैं, ताकि ताक़त साफ़

साफ़ उनकी नज़र आए।

4. हाथी बैठ गया जहाँ आदमी नहीं रुके — ग़फ़लत इंसान को जानवर से भी कम समझदार बना देती है।

5. जो चीज़ आज आपको हद से बड़ी लग रही है, उसका भी एक रब है जिसे कभी बड़े औज़ार की ज़रूरत नहीं पड़ी।

6. अल्लाह ज़मीन बीज से बहुत पहले तैयार करते हैं — घर की हिफ़ाज़त नबी ﷺ की विलादत से चंद हफ़्ते पहले हुई।

7. हक़ के लिए कोशिश कीजिए मगर उसके नतीजे का बोझ मत उठाइए; वो बोझ आपको दिया ही नहीं गया था।

या अल्लाह, आप जिन्होंने एक लश्कर को खाए हुए भूसे जैसा कर दिया — हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाइए, और जो आपका है उसे आप ही के सुपुर्द करने वाला बना दीजिए। आमीन।